Vol 6 Issue 1 Oct 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor :3.8014(UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | October - 2016

Review Of Research

सूर्य कवि सूरदास की भक्ति–साधना का अवलोकन

Dr. Bhagirath
Assistant Professor in Hindi, UCDL Branch,
Ch. Devi Lal University, Sirsa (Haryana)

सूरदास जी ने सगुण भक्ति का समर्थन किया है। वे बहुमुखी सर्जनात्मक प्रतिभा के भक्त कवि थे, सूरदास की सी काव्ययात्रा भक्ति की ही भूमिका पर ही अधिष्ठित है। सूरदास सबसे पहले भक्त है, श्रेष्ठ भक्त, भक्ति ही उनकी साध्या हैं। कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवियों में सूरदास प्रमुख कवि के रूप में जाने जाते हैं। 'सूरसागर' उनका उत्कृष्ट ग्रंथ है। इस परम्परा में श्रीकृष्ण की प्रेममयी मूर्ति को लेकर प्रेमतत्व की बड़े विस्तार के साथ व्यंजना हुई है, उनके लोकपक्ष का उसमें सुंदर समावेश है। सूर की भक्ति के दो आयाम है। प्रष्टिमार्ग से अनुमोदित तथा प्रष्टिमार्ग से मुक्त, लेकिन ये दोनों ही मार्ग या सूर की समग्र भक्ति भावना मानवात्मा का परिष्कार तथा विस्तार करती है। वैसे भी चर्चित रूप में रचनाओं के आधार पर तथा अंत और बाह्य दोनों ही साक्ष्यों के आधार पर 'सूरदास' निःसंदेह कृष्ण–भक्त ही अधिक प्रचलित और प्रमाणित हैं। सूरदास जी प्रज्ञासूर्य हैं और श्रीमद्भागवत् के 'उद्धव' जी प्रज्ञा के साक्षात् पर्याय सूरसागर में सूरदास को उद्धव जी का ही अवतार माना गया है–

"सूरदास जी जगविदित, श्री उद्धव अवतार।
कथा पुराणांतर कथित, वर्णन करौं उदार।।"

तथा...."भनै रघुराज सोई उद्धव अवनि आइ, रसिक शिरोमणि सो सूर कहवायौ है।"

सूरदास के पदों में दास्य भाव की भक्ति भावना परिलक्षित होती है। उन्होंने अपने पदों में भौतिक दुखों से छुटकारा पाने के लिए प्रभु से विनय किया है। दास्यभाव की भक्ति में यहां एक ओर भक्त भगवान के गुणों का स्मरण करता है वहां दूसरी ओर अपने अवगुणों और न्यूनताओं को भी व्यक्त करता है। सूरदास जी ने अपने पदों में शान्त भाव से श्री कृष्ण की भक्ति करने पर बल दिया है। सूरदास के विनय के पद शान्त भाव की भक्ति के अन्तर्गत आते हैं। सूरदास ने अपने पदों में श्री कृष्ण व गोपियों के प्रेमभाव को दर्शाया है जो उनके माधुर्य भाव की भक्ति को स्पष्ट करती है। सूरदास जी के काव्य में वात्सल्य भाव की छटा अनुपम है। सूरदास के वात्सल्य को देखकर कुछ विद्वानों ने इन्हें वात्सल्य भाव के सम्राट की संज्ञा दी है। सूरदास जी ने गोपियों के माध्यम से श्री कृष्ण के प्रति अपने प्रेमभाव की भक्ति का वर्णन किया है। गोस्वामी तुलसीदास जी की तरह प्रकांड पंडित नहीं थे। वे अपने समय के साधुओं एवं संतों के संपर्क में रहकर वे बहुश्रय अवश्य हुए थे। सतसंग के बल पर उन्होंने जिस ज्ञान को अर्जित किया उसी भगवत्–प्रेम के अढ़ाई अक्षर की उनकी पढ़ाई ने उन्हें साहित्य में अमर बना दिया। मानवीय संवेदनाओं और हृदय की छटपटाहट महोदधि है– सूर का हृदय–इतनी छटपटाहट, इतनी व्याकुलता, इतनी पीड़ा, इतना श्रृंगार, इतना उपालंभ कैसे समाया होगा, इस दुबले–पतले कृशकाय–सूर में। इसका उल्लेख संपूर्ण बाड्मय् में कहीं नहीं है। हो भी नहीं सकता। कौन माप सकता है इस महासागर की गहराई को? इस सूरसागर की थाह का पार भला कहीं पाया जा सकता है? वास्तव में भक्त शिरोमणि सूरदास 'सूरसागर' काव्य में कुसुम सदृश असंख्य छोटे–छोटे हृदयहारी पदों को गूंथकर श्री कृष्ण की बाल्यलीला का एक अपूर्व हार हमारे उपभोग के लिए रख गये हैं। सूरदास का वियोग वर्णन काव्य शास्त्रीय दृष्टि से भी खरा उतरता है। शास्त्रों में वर्णित विरह की ग्यारह दशाओं का वि ने सजीव चित्रण किया हैं। सूरदास का विरह वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक, मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी है। सूरदास गोपियों और राधा की विरह वेदना को व्यक्त करने में सफल रहे है।

"सूर का हृदय ममत्व का अथाह सागर था जिसमें पवित्रता, निश्छलता, निर्मलता की लहरें काव्य भाषा बनकर निःसृत हुई। सूर की हृदयता ही तो उसके वात्सल्य वर्णन के रूप में प्रकट हुई हैं। सूरसागर इन्हीं पवित्र लहरियों का महासागर है जिसमें से निर्मलमना नीर क्षीर विवेकी हंस पुरूष मोती, माणिक्य चुन लेते हैं।" सूर की भक्ति में 'नवधा'

का बड़ा ही अभूतपूर्व, अद्भूत सामंजस्य है। सूर–प्रज्ञा तो स्वयं प्रकृति–ऋतु है–षड्ऋतुओं का आना–जाना। दैन्य, मान–मर्यादा, निष्ठा, आत्मा–विश्लेषण, ताड़ना, लीला–माधुर्य इन्हीं में समाया हैं–

"श्रवण, कीर्तन, स्मरण पाद, रत, अरचन, वंदन दास।
सखय और आतमा निवेदन प्रेम लक्षणाजास।"–सूरसागर

नवधा भक्ति के आयामों का आकाश इन उर्पुक्त सभी भावों का चरमोत्कर्ष सूर के पदों में खिली लहलहाती पीली सरसों का बसंत हैं। कृष्ण के मधुर रूप को अपने काव्य का मूलाधार बना उस पुष्टिमार्ग को जिसमें भगवान के अनुग्रह से, भक्त प्रभु के आनंदधाम में पहुँच जाता हैं। डॉ. हरबंश लाल शर्मा के विचार हैं कि "सूर शक्ति द्वारा उस साधना पर पहुंच चुके थे, जहां पहुंचकर भक्त के लिए समस्त ब्रह्माण्ड हस्तामलकवत् हो जाता है।"

सूरदास भक्ति की, ज्ञान की, प्रेम की, और श्रद्धा की पराकाष्ठा को पा चुके थे। वो भक्ति जो श्रद्धा और प्रेम मार्ग का नाम है, वो भक्ति जो अनुरागयुक्त पूजा है। श्रीमद्भागवत् में प्रेम को श्रद्धा और भक्ति की मध्यवर्तिनी अवस्था मानते हुए निश्चित किया गया है कि 'पहले श्रद्धा, फिर रति और फिर भक्ति अनुक्रमित होती है। सूर की मधुरा–भक्ति जिसमें अध्यात्मक और लौकिकता का एक अति अनूठा, अनुपम ऐसा समन्वय है जो और कहीं देखने को नहीं मिलता। आचार्य शुक्ल ने सूरदास ने कृष्ण के मधुर रूप को अपने काव्य का प्रमुख विषय क्यों बनाया इसका बड़ा सुंदर स्पष्टीकरण किया है। उनके अनुसार "चक्र सुदर्शनधारी योगेश्वर कृष्ण को सूर ग्रहण न कर सके, क्योंकि पूज्यबुद्धि से संचारित श्रद्धा के सहारे 'परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम, धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे–युगे', वाले कृष्ण का ईश्वरीय स्वरूप भगवद्गीता और अन्याय कृष्ण–भक्ति के संस्कृत काव्यों में इतने उच्च धरातल पर अधिष्ठित हो चुका थाकि उनकी पुनरावृत्ति करके 'सूर' किसी 'मौलिक–काव्य' का संसार नहीं बसा सकते थे। ऐसा करके वे पुनरावृत्ति दोष से ग्रसित हो जाते और उनका कवि 'कर्महीन काव्य'–के अंतर्गत गिना जाता।" 'सूरसागर' 'भ्रमरगीत' जैसे अनूठे कृष्ण करूणा के संत्संग में खोये सूर स्वयं को सावधान करते हैं,–रे मन मूरख जन्म गँवायौ?

सूरदास कछु खर्च न लागत राम नाम मुख लेत।"

बाललीला' उपखण्ड में सूरदास जी ने श्री कृष्ण के विभिन्न रूपों का बड़ा हृदयग्राही वर्णन किया है। सूरदास जी कहते है कि कृष्ण के जन्म के समय नंद बाबा के घर व गांव में शोभा का सागर बह रहा है। सूरदास ने बाल क्रीड़ाओं, बाल चेष्टाओं व बाल मनोविज्ञान का जैसा सूक्ष्म वर्णन किया है वैसा सहज एवं व्यापक वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। सूरदास ने बाल लीला उपखण्ड में बालक श्री कृष्ण के सिर पर मुकुट, कानों में कुंडल, शरीर पर पीले वस्त्र तथा चार भुजाएं सुशोभित हो रहे है। सूरदास के काव्य में श्रृंगार के संयोग पक्ष का बड़ा रोचक व जीवान्त वर्णन हुआ है। सूरदास ने संयोग पक्ष में राधा व श्री कृष्ण की लीलाओं का चित्रण किया है। यमुना तट पर वे राधा से प्रथम बार मिलते है। सूरदास ने राधा–कृष्ण की संयोग क्रीड़ाओं के अनेक भव्य चित्र अंकित किए है।

डॉ. परेश मधुर रस को भक्ति–शास्त्र का सर्वश्रेष्ठ और अंतिम रस मानते हुए कहते हैं कि 'भक्ति की सारी साधनाही इस मधुर रस को पाने के लिए होती है। फिर सूर तो अपने इस रस के आलम्बन ईष्ट साक्षात् माधुर्य स्वरूप श्रीकृष्ण में इस प्रकार रत्त हैं कि इन्होंने 'भगवत्–रति' के पांचों प्रकारों–शांत, दास्य, वात्सल्य, कान्ता या मधुरा सभी का पंचनद बना एक महान् सागर बना डाला जिसमें आ करये पंचरतिनद् मिल जाते हैं। उनके अनुसार 'समरदास' में यद्यपि वात्सल्य रस का सबसे सुंदर परिपाक हुआ है, लेकिन वे भी मधुरा को ही संप्रदाय को नियमों के अनुसार सबसे उच्चकोटि कामानते थे और इसी भाव से वे भगवान की अराधना करते थे। बार–बार अपने मन को समझाते नहीं थकते–सूरदास–

रे मन सुमिरि हरि हरि हरि।
शतयज्ञ नाही नाम सम परतीति करि करि करि।

ऐस महान कवि के भक्ति रस से आप्लावित पदों का सुनकर देशाधिपति ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की और चाहा कि सूरदास जैसा ज्ञानी पूर्णप्रज्ञः पुरूष यदि उनकी कीर्ति का गुणगान करे तो वो धन्य हो जाए। अब भक्ति की पराकाष्ठा, दीवानगी, एकाग्रता और निष्ठा देखिए जो पद भक्त शिरोमणि, प्रज्ञाचक्षु, महाप्रज्ञ के मुख से निसृत हुआ वो था– मना र तू करि माधव सों प्रीति।' ऐसा पद जिसमें कही देशाधिपति का नामानिशान नहीं केवल और केवल अपने माधव का, अपने कान्हा का गुणगान मिला। पुनः देशाधिपति के अनुग्रह पर कि 'सूरदास जी मोको परमेश्वर ने राज्य दीनो हैं सो सब गुणीजन मेरो यशागावत हैं ताते मेरो यश कछु गावो।' तब सूरदास जी ने पद गाया वो द्रष्टव्य है, जिसने वादशाह की आँखें खेल दी ये सुनते ही–

'नाहिंन रह्यो मन में ठौर। सूर एसे दर्शकों एक मरत लोचन प्यास।"

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि श्री कृष्ण को अपना सर्वस्व मानते हुए अपने भक्ति के अनेक भाव उनके चरणों में रखे है सूर ने श्री कृष्ण को परब्रह्म का रूप माना है जो सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि सूरदास ने सगुण भक्ति को अपनाते हुए श्री कृष्ण के प्रति अपने श्रृद्धा भाव व्यक्त किए हैं। सूर की भक्ति और उक्ति दोनों को देखकर तो सुर–सम्राट 'तानसेन' भी निःसंकोच सूर की महिमा गा उठते हैं–

"किंधौं सूर को सर लग्यौ, किंधौ सूर की पीर।
किंधौं सूर को पद लग्यौ, तन मन धुनत सरीर।।

सूर को समझना, सूर के भावों का समझना, उसकी दिव्य–दृष्टि, उसकी प्रज्ञा तक पहुंचना, उसे पढ़ना, साहित्यविदों के वश में है, मगर उसे देखना हरेक के वश की बात नहीं हैं। सूर के भीतर तक झांकना, उस अलख में झाकने के बराबर है। सूरदास ने ऐसा वर्णन कैसे कर लिया, कैसा गा लिया, कैसे देखा, इन सब विवादों में न पड़कर यदि हम इस सिरे को पकड़ लें कि सूर वस्तुतः 'पूर्णप्रज्ञा चक्ष' थे तो सरा विवाद ही स्वतः खत्म हो जाएगा। प्रज्ञासूर्य 'सूर' के ज्ञान को कौन माप सकता है? मात्र सत्संग के प्रभाव से उन्होंने संस्कृत भाषा के स्त्रोतों का ज्ञान प्राप्त किया, महाप्रभु से विद्वान के सान्निध्य और आचार्यतव से, अपनी ईश्वर प्रदत्त काव्य–प्रतिभा को प्रखर रूप दिया। इसी से तो तीनों शब्द शक्तियों का अनूठा संगम 'भ्रमरगीत' और प्रेम, भक्ति तथा संगीत की त्रिवेणी 'सूरसागर' का जन्म हुआ। भक्त और वह भी श्रीमद्भागवद प्रेम में रसा–बसा–कभी जन्मांध मानते है, ता कभी तर्क देते हैं।

वात्सल्य भाव की इतनी सजीव प्रस्तुति नेत्रहीन दे ही नहीं सकता–संभव है ये बाद में ही नेत्रहीन ज्योति हुए है। दुख और अभाव–भरी जिंदगी रही होगी, तो विरह वर्णन एवं राधाकृष्ण के माधुर्य पूर्ण प्रेम लीलाओं को आंखों से देखे बिना वास्तविकता कैसे संभव हुई।

सूर के विनय के अनेक पद भाव और अभिव्यक्ति के स्तर संस्कृत के श्लोकों के समान पड़ते हैं। सूरदास ने श्री कृष्ण की बाल सुलभ चेष्टाओं का सहज स्वाभाविक वर्णन किया है। सूरदास वात्सल्य वर्णन में अनुपम और अद्वितीय कवि है। वे बाल मनोविज्ञान के अच्छे कवि माने जाती है। उन्होंने श्री कृष्ण की विभिन्न क्रीड़ाओं व चेष्टाओं का सजीव तथा स्वाभाविक वर्णन किया है। सूरदास जी वात्सल्य भाव को स्पष्ट करने वाले सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते है। सूरदास जी ने बाल कृष्ण के सैंदर्य, श्री कृष्ण के चलने में, मां यशोदा के पुत्र प्रेम का बड़ा मनोरम चित्रण किया है। वास्तव में सूर ही वात्सल्य है, वातसल्य ही सूर है।

---

1. सूरसागर, पृ. 11
2सूरसागर, द्वितीय स्कन्ध, पद 27
3. भ्रमरगीत और सूर – देवेन्द्र कुमार, पृ. 87
4. सूर और उनका साहित्य – डॉ0 हरबंश लाल शर्मा, पृ. 29
5. चिंतामणि (प्रथम भाग) रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 40
6. नारद भक्तिसूत्र, 16
7. सूर की काव्य चेतना, डॉ. रत्नाकर पांडेय, भूमिका, पृ. 5
8.सूरसागर, पद 175
9.सूरदास की लालित्य चेतना–डॉ0 परेश, पृ. 159
10. सूरसागर , पद 188
11. सूरसागर (सारावली), पृ. 26
12. सूरसौरभ : जगन्नाथ तिवारी, पृ. 17

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org